प्रदोष व्रत: शिव कृपा से पाएं सुख-समृद्धि

प्रदोष व्रत की महिमा और फल

दरिद्रता और संकट का नाश

इस व्रत के प्रभाव से पुजारी की पत्नी और राजकुमार को घोर दरिद्रता से मुक्ति मिली।

खोया हुआ राज्य और सम्मान पुनः प्राप्त

व्रत के पुण्य से राजकुमार धर्मगुप्त ने शत्रुओं पर विजय पाकर अपना राज्य वापस पाया।

मनोकामनाओं की पूर्ति

यह व्रत सभी पाप, रोग और कष्टों को दूर कर जीवन में सुख-शांति लाता है।

प्रदोष व्रत की सरल विधि

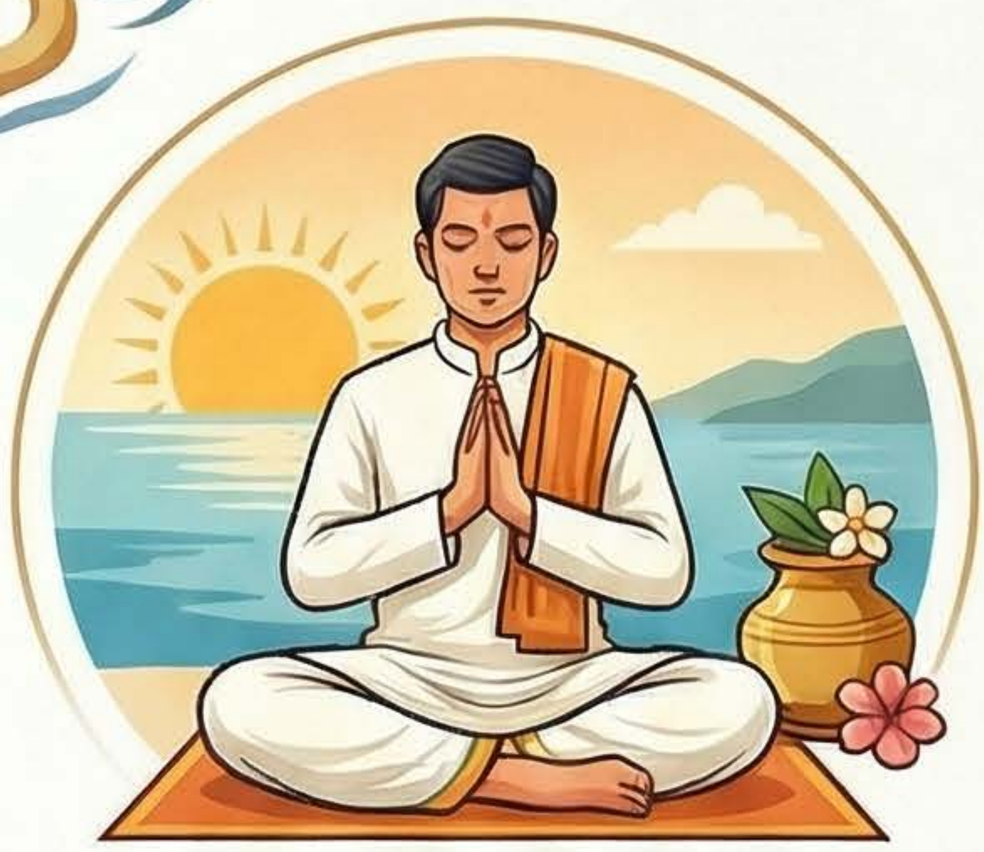

1. प्रातःकालीन संकल्प

त्रयोदशी को सुबह स्नान के बाद स्वच्छ मन से व्रत करने का प्रण करें।

2. सायंकालीन पूजन (प्रदोष काल)

सूर्यास्त के बाद शिवलिंग का पंचामृत व जल से अभिषेक कर बेलपत्र अर्पित करें।

3. कथा, मंत्र जाप और आरती

प्रदोष व्रत की कथा सुनें, 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करें और अंत में आरती करें।

NotebookLM